इन्क़िलाबी नज़र
आवाज़ ... आम आदमी की
लखनऊ, शनिवार, 10 अगस्त 2024
वर्ष 16 अंक 334 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जिसने इंद्रियों को वश में किया उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पड़ती है, निस्पृह को जगत तृण है
-चाणक्य

तापमान - अधिकतम 31.6°C (-1.9) न्यूनतम 26.0°C(+0.2) सेंसेक्स 79,705.91 (+819.69) निफ्टी 24,367.50 (+250.50) सोना 70,240 चांदी 83,000 मुद्रा - डालर 83.94 दिरहम 22.85 रियाल 22.38

'एथिक्स इन मेडिकल रिसर्च इन गुड क्लीनिकल प्रैक्टिस' विषय पर वर्कशाप

एरा यूनिवर्सिटी

चिकित्सा अनुसंधान से जुड़े नैतिक मुद्दों पर हुई व्यापक चर्चा

लखनऊ (ब्यूरो)। एरा यूनिवर्सिटी के मिनी ऑडिटोरियम में 'एथिक्स इन मेडिकल रिसर्च इन गुड क्लीनिकल प्रैक्टिस' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। ये आयोजन 'इंस्टीट्यूशनल एथिक्स कमेटी' की ओर से किया गया। कार्यशाला में चिकित्सा अनुसंधान से जुड़े नैतिक मुद्दों पर व्यापक चर्चा की गई। कार्यशाला का आयोजन पोस्ट ग्रेजुएशन कर रहे डॉक्टरों और मेडिकल फैकल्टी के लिए खासतौर से किया गया था।

कार्यशाला का उद्घाटन शुक्रवार की सुबह दस बजे हुआ। पहले सत्र में सदस्य सचिव आईईसी प्रोफेसर डॉ. लक्ष्मी सिंह ने आईईसी की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि आईईसी किस प्रकार अनुसंधान के हर चरण में नैतिक मानकों को सुनिश्चित करने में सहायता करती है। उन्होंने जोर दिया कि आईईसी का कार्य न केवल नैतिकता को बनाए रखना है बल्कि सही मार्गदर्शन और समर्थन देकर अनुसंधान को नैतिक रूप से समृद्ध बनाना भी है। इसके बाद चिकित्सा नैतिकता के इतिहास, नई औषधि और प्रसाधन अधिनियम और सूचित सहमति और गोपनीयता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

दोपहर के सत्र में प्रतिभागियों ने नैतिक मुद्दों के साथ-साथ रोगी देखभाल में व्यवहारिक नैतिकता, चिकित्सा अनुसंधान में कृतिम बुद्धिमत्ता (एआई) और शोधकर्ताओं की जिम्मेदारी पर विचार-विमर्श किया। इस कार्यशाला में एरा यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर एए मेहदी, प्रो. वाइस चांसलर प्रोफेसर फरजाना महदी, प्रोफेसर यूके मिश्रा (अध्यक्ष आईईसी) और प्रोफेसर जमाल मसूद (प्राचार्य और सीएमएस एरा यूनिवर्सिटी) ने भी अपने विचार साझा किए। कुलपति ने चिकित्सा नैतिकता और उत्तम नैदानिक अभ्यास के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि ये चिकित्सा अनुसंधान और रोगी देखभाल में उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने नैतिक मूल्यों का पालन करने पर जोर दिया। प्रोफेसर यूके मिश्रा ने चिकित्सा नैतिकता और उत्तम नैदानिक अभ्यास के महत्व पर चर्चा करते हुए विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत किए।

उन्होंने समझाया कि ये सिद्धांत हमारे जुनून और नवाचार की दिशा में बाधा नहीं बल्कि मार्गदर्शक हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि हम सही दिशा में चलते हुए अनुचित प्रथाओं से बचें और उच्चतम मानकों को बनाए रखें। कार्यशाला के अंत में परीक्षा और प्रमाण पत्र वितरण किया गया जिससे प्रतिभागियों को उनके प्रयासों के लिए मान्यता दी गई। इस कार्यशाला ने चिकित्सा अनुसंधान में नैतिकता के महत्व को उजागर किया और चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई।